"नैतिक, अनैतिक तथा नीतिशून्य कर्मों में अंतर बताएँ।"
"Make distinction between Moral, Immoral and Non-moral actions"

नीतिशास्त्र का लक्ष्य मानव - आचरण के ऐसे आदर्श का निरूपण करना है जिससे मिलान करके किसी कर्म को उचित या अनुचित कहा जा सके। परन्तु सभी प्रकार के कर्मों पर नैतिक निर्णय नहीं किया जा सकता है केवल नैतिक कर्मों (moral actions) का ही नैतिक निर्णय किया जा सकता है। जिसे हम तीन प्रत्ययों के रूप में विचार करते हैं वे हैं:- नैतिक (Moral), नीतिशून्य (Non-moral) और अनैतिक (Immoral) इन्हीं तीन के अनुरूप कर्म भी तीन प्रकार के होते हैं - नैतिक कर्म (Moral actions), नीतिशून्य कर्म (Non-moral actions) और अनैतिक कर्म (Immoral actions)।

नैतिक कर्म (Moral Actions):- नैतिक प्रत्यय का प्रयोग दो अर्थ में होता है - संकुचित और व्यापक अर्थ। संकुचित अर्थ में सत उचित को 'नैतिक' कहते हैं असत अनुचित को अनैतिक। नीतिशास्त्र 'नैतिक' प्रत्यय को इस अर्थ में ग्रहण नहीं करता। व्यापक अर्थ में नैतिक का अर्थ है नैतिक गुणसंपन्न। जिसमें उचित या अनुचित, सत या असत, पाप या पुण्य कहा जा सके उन्हें नैतिक कर्म कहते हैं। P.B. Chatterji के शब्दों में "नैतिक शब्द का अर्थ है जिसमें नैतिक गुण (उचित और अनुचित, शुभ और अशुभ) प्रस्तुत हो उसे सत अथवा असत शुभ या अशुभ हो" ~~इस प्रकार~~ प्रो० (डा०) जे० एन सिन्हा ने कहा है।
"The word 'moral' means that in which moral quality is present." P.B. Chatterji के अनुसार - "The word 'moral' means that in which moral quality (rightness or wrongness, goodness or badness) is present, i.e. what is either right or wrong good or bad." नैतिक कर्मों को ऐच्छिक कर्म भी कहते हैं। वैसे कर्म जो चेतन रूप से इच्छा करके किया जाता है उसे ऐच्छिक कर्म कहते हैं। उन कर्मों के संपादन में व्यक्ति को ~~कर्मों के~~ इच्छा - स्वतंत्र रहना आवश्यक है।

~~संगठन में व्यक्ति का कृत्य-स्वत~~

जब कोई व्यक्ति दवाब में आकर कर्म करता है तब उसके कर्म को ऐच्छिक कर्म नहीं कहा जा सकता है केवल ऐच्छिक कर्मों से नीतिशास्त्र का संबंध रहता है। ये ऐच्छिक कर्म नैतिक कर्म है। नैतिक निर्णय के अंतर्गत सभी ऐच्छिक क्रियाएँ आ जाती है इन सभी कर्मों का नैतिक निर्णय किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त मनुष्य के अभ्यासजन्य कर्म भी नैतिक कर्म कहे जाते हैं जो मुख्य रूप से अभ्यास के द्वारा किया जाता है।

नैतिक कर्म का एक यह महत्वपूर्ण लक्षण है कि इसका कर्ता सदैव एक विवेकशील व्यक्ति होना चाहिए। अविवेकी या पागल के ऐच्छिक और अभ्यास-जन्य कर्म नैतिक नहीं कहा जा सकता है और उनका निर्णय नहीं हो सकता है।

अनैतिक कर्म (Immoral Actions) — साधारणतः जो कर्म नैतिक दृष्टिकोण से उचित है उसे नैतिक कहा जाता है यह 'नैतिक' का संकुचित अर्थ है। इस 'नैतिक' का विपरीतार्थक शब्द अनैतिक है। जो कर्म नैतिक दृष्टिकोण से कुकर्म अनुचित होता है उसे अनैतिक कर्म कहते हैं। नैतिक दृष्टि से जो कर्म निंदनीय है वे अनैतिक कहलाते हैं जैसे - धोखा देना, गाली देना, चोरी करना इत्यादि। ये सभी अनैतिक कर्म हैं उन्हें अनैतिक कहा जा सकता है क्योंकि इनका नैतिक निर्णय संभव है।

नीतिशून्य कर्म (Non-moral Actions) —

नीतिशून्य कर्म वे है जो नैतिक गुणों से रहित हो। इन कर्मों पर नैतिक निर्णय नहीं किया जाता है। पी.बी. चटर्जी के अनुसार — "नीतिशून्य का अर्थ है नैतिक गुण से रहित कर्म, जो नैतिक निर्णय का विषय नहीं हो।" (The word 'non-moral' means that which is devoid of moral quality.) अनैच्छिक कर्म को ही नीतिशून्य कर्म कहते हैं।

नीतिशून्य कर्म के प्रकार (Kinds of Non-moral Actions)

नीतिशून्य कर्म के निम्नलिखित मुख्य प्रकार हैं! —

(a) निर्जीव पदार्थों (Inanimate Things) के कर्म
(b) पौधों या पशुओं के कर्म
(c) अबोध बालकों के कर्म
(d) पागलों एवं विक्षिप्तों के कर्म
(e) मनुष्य की प्रतिक्षेप क्रियाएँ
(f) अनियमित क्रियाएं
(g) सहज क्रियाएँ
(h) विचारप्रत्यावर्ती क्रियाएँ
(i) दबाव (Pressure) या बाध्यता (Compulsion) के वशीभूत होकर किए गए कर्म
(j) सम्मोहितावस्था (Hyponotism) में किए गए कर्म
(k) समाज पर असर न लानेवाले कर्म

मानव-आचरण या कर्म ही नीतिशास्त्र के पाठ्य-विषय हैं परन्तु सभी कर्मों का अध्ययन नैतिक कर्म के अन्तर्गत आते हैं। उन्हें ही ऐच्छिक कर्म (voluntary actions) भी कहते हैं वैसे कर्मों के संपादन में व्यक्ति की स्वेच्छा आवश्यक मानी जाती है इन्हीं कर्मों को उचित या अनुचित, शुभ या अशुभ कहा जा सकता है इसके ~~विपरीत~~ विपरीत नीतिशून्य कर्म (non moral actions) नैतिक गुणों से रहित रहते हैं उन्हें उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ या पाप-पुण्य आदि नहीं कहा जा सकता है वे कर्म नैतिक निर्णय का विषय नहीं हो सकता हो पागलों, अबोध बालकों, विक्षिप्तों, पेड़-पौधों एवं निर्जीव पदार्थों के कर्मों को नीतिशून्य कर्मों के अंतर्गत रखा जाता है। इसी प्रकार स्वावश्यक किए गए कर्म तथा सम्मोहितावस्था के लिए गए कर्म भी इसी प्रकार के कर्म कहे जा सकते हैं

मुख्य रूप से नीतिशास्त्र का सम्बन्ध केवल नैतिक अथवा ऐच्छिक कर्मों से रहता है इसीलिए यहाँ नैतिक कर्मों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी किया गया है।

नैतिक कर्म को ऐच्छिक कर्म भी कहा जाता है दोनों को समानार्थक माना जाता है।

ऐच्छिक कर्म वे कर्म हैं जिन्हें व्यक्ति जान-बूझकर किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए करता है। ऐच्छिक कर्म के तीन अवस्थाएँ होती हैं : मानसिक स्थिति, शारीरिक स्थिति, तथा परिणाम की अवस्था

ऐच्छिक क्रिया के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि उपर्युक्त तीन स्थितियों में शारीरिक अवस्था, पूर्णरूपेण शरीरविज्ञान के अन्तर्गत आती है यह नैतिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों से अत्यन्त महत्वपूर्ण कही जा सकती है

उपरोक्त सारी बातों को ध्यान देने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नीतिशास्त्र में किसी नियम के अनुकूल रहने पर उसे उचित कहते हैं और प्रतिकूल रहने पर उसे हम अनुचित कहेंगे। स्वाभाविक रूप से उचित यहाँ शुभ की प्राप्ति में सहायक होता है अनुचित अशुभ की प्राप्ति में सहायक होगा। हम किसी भी आचरण को उचित या अनुचित यूँ ही नहीं घोषित कर देते हैं बल्कि उसे एक नैतिक मापदण्ड के आधार पर ही उचित या अनुचित घोषित करता है इस प्रकार नैतिक कर्म और अनैतिक कर्म या दोनों का अपना अलग-अलग विचार ऊपर के सभी परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है।

DR. Ajay Kumar Sinha
Deptt. of Philosophy
Mahila College Dalmianagar,
Dehri-on-Sone, Rohtas